Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग (MPPSC)

निबंध

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: MPM07

मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग (MPPSC)

निबंध

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
टोल फ्री : 1800-121-6260
Web : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

MPPCS DLP विषय सूची (Contents)

1.	**निबंध लेखन : क्या, क्यों, कैसे?**	**5–33**
1.1	निबंध क्या है?	5
1.2	निबंध लिखने की प्रक्रिया और उससे जुड़ी चुनौतियाँ	9
1.3	निबंध लेखन से जुड़े अन्य सुझाव	29
2.	**निबंधों का संग्रह (लगभग 1000 शब्द सीमा)**	**34–79**
2.1	गांधीवाद और आधुनिक हिंदी साहित्य	34
2.2	इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और समाज पर उसका प्रभाव	35
2.3	भाषा और संस्कृति	37
2.4	आधुनिकीकरण के विविध आयाम	39
2.5	शिक्षा समाज को बदलने का सबसे शक्तिशाली हथियार है।	41
2.6	क्या जल के उचित प्रबंधन के लिये इसका निजीकरण कर दिया जाना चाहिये?	42
2.7	भीड़तंत्र का न्याय: व्यवस्था की असफलता	44
2.8	चीन मुद्दे पर क्या हो हमारी नीति?	46
2.9	महिलाओं के संवैधानिक विधिक अधिकार: वर्तमान परिदृश्य	48
2.10	भारत में बाल विवाह का उन्मूलन क्यों सफल नहीं?	50
2.11	सागरीय प्रदूषण : प्रदूषण का अनछुआ पहलू	52
2.12	भारत- चीन मैत्री: वर्तमान परिदृश्य	53
2.13	भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम: नए युग की शुरुआत	54
2.14	जीएसटी: एक देश एक तंत्र	56
2.15	कायरों के लिये वीरता एक बुराई है।	59
2.16	कल्पना शक्ति बुद्धिमत्ता से ज्यादा महत्त्वपूर्ण है।	60
2.17	अग्नि एक अच्छा नौकर किंतु बुरा स्वामी है।	62
2.18	देश में उच्च आर्थिक संवृद्धि और संसाधनों का असमान वितरण।	64
2.19	वास्तविकता की कोई अनूठी (अद्वितीय) तस्वीर नहीं होती	66
2.20	उपभोक्तावाद की संस्कृति का शिकार आम आदमी	68
2.21	सहकारी संघवाद: कल्पित कथा या वास्तविकता	70
2.22	सभी महान उपलब्धियाँ समय मांगती हैं।	73
2.23	सारा जगत स्वतंत्रता के लिये लालायित रहता है, फिर भी प्रत्येक जीव अपने बंधनों को प्यार करता है।	75
2.24	विज्ञान एवं रहस्यवाद : क्या दोनों एक-दूसरे से संगत हैं?	77
3.	**निबंधों का संग्रह (लगभग 250 शब्द सीमा)**	**80–120**
3.1	कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्	80
3.2	राष्ट्रभाषा हिन्दी : स्थिति और अपेक्षाएँ	80
3.3	बेरोज़गारी की समस्या	81
3.4	पराधीन सपनेहुँ सुख नाहिं	81
3.5	भारतीय संसद की कार्य-प्रणाली	82
3.6	भारत की सांस्कृतिक एकता	83

3.7 चलचित्र के लाभ एवं हानियाँ 84
3.8 प्रदूषण : समस्या और समाधान 84
3.9 जलवायु परिवर्तन एवं इसके वैश्विक प्रभाव 85
3.10 नारी है तो कल है 86
3.11 स्वच्छ भारत मिशन 86
3.12 विमुद्रीकरण के संभावित प्रभाव 87
3.13 महिलाओं के लिये कार्यस्थल पर समानता 88
3.14 मनुष्य मूलत: स्वार्थी प्राणी है। 89
3.15 मैं सोचता हूँ, इसलिये मैं हूँ। 89
3.16 सहकारी संघवाद: मिथक अथवा यथार्थ 90
3.17 वास्तविक शिक्षा क्या है? 91
3.18 दिव्यांगजनों के सशक्तीकरण में आरक्षण का महत्त्व 91
3.19 राजनीति में नारी की भूमिका 92
3.20 भारत में स्वास्थ्य व्यवस्था 93
3.21 डिजिटल अर्थव्यवस्था 93
3.22 इतिहास हमारे वर्तमान विकास हेतु मार्गदर्शक है। 94
3.23 भारत में बाल श्रम की समस्या 95
3.24 भारत में विविधता: वरदान एवं चुनौती 96
3.25 धारणीय आर्थिक विकास 97
3.26 'वैश्वीकरण' बनाम 'राष्ट्रवाद' 98
3.27 शहरी क्षेत्र में बाढ़: संकट एवं प्रबंधन 98
3.28 न्यू इंडिया विज़न 99
3.29 सौर ऊर्जा: भविष्य की ऊर्जा के रूप में 100
3.30 सोशल मीडिया और आंतरिक सुरक्षा 101
3.31 लोक प्रशासन में पारदर्शिता की आवश्यकता 101
3.32 युद्ध और प्रेम में सब कुछ जायज़ है 102
3.33 रोज़गारविहीन संवृद्धि 103
3.34 क्या तकनीक हमारी रचनात्मकता खत्म कर रही है? 104
3.35 नगरीकरण : एक प्रच्छन्न वरदान है। 105
3.36 लोकतंत्र में धार्मिक अधिकारों की प्रासंगिकता 107
3.37 प्रौद्योगिकीय विकास ने लोगों के बीच दूरियाँ बढ़ा दी हैं। 108
3.38 क्या देश के जनजातीय क्षेत्रों में सभी नूतन खननों पर अधिस्थगन लागू किया जाना चाहिये? 109
3.39 'सार्वभौमिक आधारभूत आमदनी योजना' एक विकल्प के रूप में 110
3.40 गांधी : भारतीय सभ्यता के अग्रदूत 111
3.41 'भारत की समेकित संस्कृति' 111
3.42 एक राष्ट्र, एक चुनाव: चुनौतियाँ व उपाय 112
3.43 'आरक्षण, राजनीति एवं शक्ति संपन्नीकरण' 114
3.44 "दलित विमर्श: दशा और दिशा" 115
3.45 भारत में बढ़ता खाद्य संकट 116
3.46 आज की युवा जीवन शैली 117
3.47 आतंकवाद: एक चुनौती 118
3.48 पर्यटन: संभावित उद्योग 119

अध्याय
1

निबंध लेखन : क्या, क्यों, कैसे?

निबंध लिखना विद्यार्थी जीवन की सबसे कठिन चुनौतियों में से एक है। पढ़ाई चाहे विद्यालय स्तर की हो, कॉलेज स्तर की या प्रतियोगी परीक्षाओं के स्तर की, निबंध लेखन की चुनौती विद्यार्थियों के सामने बनी ही रहती है। कई विद्यार्थियों के मन में यह सहज सवाल उठता है कि आखिर उनसे निबंध क्यों लिखवाया जाता है? निबंध को पढ़कर कोई उनके मानसिक स्तर या व्यक्तित्व का मूल्यांकन कैसे कर सकता है? और अगर कर सकता है, तो उन्हें एक बेहतरीन निबंध कैसे लिखना चाहिये?

इस लेख के माध्यम से हम ऐसे ही कुछ प्रश्नों को सुलझाने की कोशिश करेंगे। विश्वास रखिये कि निबंध लेखन की कला कोई जन्मजात कला नहीं है, इसे कठोर अभ्यास से निश्चित तौर पर साधा जा सकता है। अगर आप भी ठान लेंगे कि आपको प्रभावशाली निबंध लेखक बनना है तो एक-दो महीनों के निरंतर और रणनीतिक अभ्यास से आप निश्चय ही इस सपने को साकार कर लेंगे।

1.1 निबंध क्या है?

सबसे पहले हम यही समझने की कोशिश करते हैं कि एक विधा के रूप में निबंध क्या है और यह अन्य विधाओं से कैसे अलग है? 'विधा' शब्द शायद आपको नया लग रहा होगा। इसका अर्थ साहित्य, संगीत या कला की विशेष शैलियों से होता है। उदाहरण के लिये, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, लेख और समीक्षा विभिन्न विधाओं के उदाहरण हैं। किसी विधा में उतरने से पहले बेहतर होता है कि उसके चरित्र को ठीक से समझ लिया जाए। मुझे विश्वास है कि अगर आपको निबंध विधा की ठीक समझ होगी तो निबंध लेखन की प्रक्रिया में आप अपना सतत् मूल्यांकन भी कर सकेंगे और प्रभावशाली निबंध भी लिख सकेंगे।

कुछ लोग मानते हैं कि निबंध एक प्राचीन भारतीय विधा है जिसका मूल संस्कृत साहित्य में खोजा जा सकता है। यह बात सही है कि संस्कृत में 'निबंध' नाम की एक विधा मौजूद थी जिसमें धर्मशास्त्रीय सिद्धांतों की विवेचना की जाती थी। इस विधा में लेखक पहले अपने से विरोधी सिद्धांतों को चुनौती के तौर पर पेश करता था और फिर एक-एक करके अपने तर्कों, प्रमाणों की मदद से उन सभी सिद्धांतों को ध्वस्त करता था। चूँकि इस विधा में प्रमाणों का 'निबंधन' किया जाता था, इसीलिये इसका नाम 'निबंध' पड़ गया था।

सवाल यह है कि आज हम जिसे निबंध कहते हैं, वह यही विधा है या उससे अलग? इसका सामान्यत: प्रचलित उत्तर है कि आज का निबंध अपने चरित्र और स्वरूप में संस्कृत के 'निबंध' पर नहीं बल्कि अंग्रेज़ी के 'Essay' पर आधारित है। अत: निबंध विधा को समझने के लिये हमें आधुनिक यूरोपीय साहित्य की पृष्ठभूमि का अनुसंधान करना चाहिये।

माना जाता है कि एक आधुनिक विधा के रूप में 'निबंध' की शुरुआत 1580 ई. में फ्राँस के लेखक मॉन्तेन (Montaigne) के हाथों हुई। मॉन्तेन ने अपने निबंधों के लिये 'एसे' (Essay) शब्द का प्रयोग किया जिसका अर्थ होता है- 'प्रयोग'। उस समय फ्राँस में कहानी, नाटक, कविता जैसी कई विधाएँ प्रचलित थीं पर निबंध का कलेवर उन सबसे अलग था। इसमें कहानियों की तरह न तो विभिन्न चरित्र/पात्र थे और न ही घटनाएँ। नाटक में कहानी के साथ-साथ दृश्य और मंच की भी बड़ी भूमिका होती है, पर निबंध में यह सब भी नहीं था। अगर कविताओं से तुलना करें तो उनमें छंद, तुक और लय जैसे ढाँचे उपस्थित होते हैं जो रचनाकार को एक बुनियादी फ्रेमवर्क उपलब्ध करा देते हैं; पर निबंध में ये भी नहीं थे क्योंकि निबंध पद्य (Poetry) में नहीं, गद्य (Prose) में था।

स्पष्ट है कि निबंध इन सभी विधाओं से अलग था। एक अर्थ में यह सबसे कठिन विधा के रूप में उभरा क्योंकि इसमें पाठक को बांधकर रखना सबसे मुश्किल काम था। यह मुश्किल इसलिये था क्योंकि इसमें मनोरंजन पैदा करने के लिये न घटनाएँ थीं और न ही कहानियाँ। इसमें सिर्फ 'विचार' या 'भाव' थे जो बिना किसी ओट या माध्यम के सीधे ही व्यक्त होने थे। अगर निबंध लेखक के पास सूक्ष्म विचार-क्षमता और सीधे दिल तक पहुँचने वाली भाषा हो तो ही वह अपने

अध्याय
2

निबंधों का संग्रह
(लगभग 1000 शब्द सीमा)

2.1 गांधीवाद और आधुनिक हिंदी साहित्य

M.P.P.C.S. (Mains) 2018

अगर साहित्य समाज का दर्पण होता है तो साहित्यकार समाज का सूत्र होता है। इस साहित्य सूत्र को अगर महात्मा गांधी के संदर्भ में देखा जाए तो निश्चित रूप से सूत्र में छिपा हुआ भाव भी समझा जा सकता है। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान जब महात्मा गांधी अपने व्यक्तित्व तथा कृतित्व से जनमानस को झकझोर रहे थे, उस दौरान जनमानस के बीच रहने वाले साहित्यकार भी उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। फलतः साहित्य का क्षेत्र महात्मा गांधी से काफी प्रभावित हुआ। अनेक साहित्यकारों ने गांधी जी की विचारधारा को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में अपनी रचनाओं में जगह दी।

हिन्दी साहित्य का एक बहुत बड़ा कालखंड राजनीतिक उथल-पुथल के मध्य विचरण करता रहा। भारतीय राजनीति में महात्मा गांधी के आगमन से पहले हिन्दी साहित्य जिन सीमाओं का अतिक्रमण नहीं कर पा रहा था, उन सीमाओं का गांधीयुगीन साहित्य ने न केवल अतिक्रमण किया, बल्कि साहित्य सृजन की नई दिशाएँ भी विकसित कीं। सर्वप्रथम हिन्दी साहित्य के द्विवेदीयुगीन साहित्यकारों ने महात्मा गांधी के विचारों से प्रेरणा प्राप्त कर साहित्य में नवसृजन किया। इसके बाद गांधीयुग के दौरान एक के बाद एक आने वाली साहित्यिक धाराएँ, जैसे- छायावादी धारा तथा प्रगतिवादी धाराएँ अलग होते हुए भी गांधीवाद को साथ लेकर चल रही थीं। इसका मुख्य कारण यह था कि उस समय के साहित्यकारों को यह विश्वास था कि गांधीवाद आने वाली युगीन परिस्थितियों में भी प्रासंगिक रहेगा।

गांधीवाद का प्रभाव हिन्दी साहित्य की सभी विधाओं में है। गांधीवाद के प्रमुख तत्त्व जैसे- सत्य, अहिंसा, सर्वोदय, साधन और साध्य की पवित्रता, सत्ता का विकेंद्रीकरण, मानवतावाद, लोककल्याण, शांति और हृदय परिवर्तन आदि हिन्दी साहित्य की सभी विधाओं में अलग-अलग स्वरूपों में विभिन्न कालों में दिखाई देते हैं। द्विवेदीयुगीन कवि मैथिलीशरण गुप्त की कविताओं में महात्मा गांधी के भाषायी विचारों का असर दिखता है। गांधी जी की सरल व सहज भाषा से प्रभावित होकर ही मैथिलीशरण गुप्त ने महात्मा गांधी से पत्र-व्यवहार किया था और उसी दौरान उपेक्षित उर्मिला को लेकर साकेत की रचना की थी। हिन्दी साहित्य में संस्कृतनिष्ठ और बोझिल भाषा का स्थान बोलचाल की भाषा ने ले लिया था। मैथिलीशरण गुप्त के अनुज सियारामशरण गुप्त के व्यक्तित्व के विकास में गांधीवाद का बहुत प्रभाव रहा। उनकी रचनाओं, जैसे- बापू, उन्मुक्त, गीता संवाद, झूठा-सच आदि में मानव-प्रेम, विश्व-शांति और हृदय-परिवर्तन जैसे गांधीवादी तत्त्वों के दर्शन होते हैं।

हिन्दी साहित्य का छायावादी युग महात्मा गांधी की विचारधारा से सर्वाधिक प्रभावी रहा। वर्ष 1920 से 1940 के मध्य की साहित्यिक रचनाओं में गांधीवाद की सर्वाधिक साहित्यिक अभिव्यक्ति हुई है। जयशंकर प्रसाद के महाकाव्य कामायनी में हिंसा-अहिंसा का द्वंद्व, मानवता की विजय कामना, हिंसा की निंदा, कर्मयोग के महत्त्व का प्रसार, स्व-निर्मित वस्त्रों का प्रयोग, कर्मयोग इत्यादि तत्त्व अप्रत्यक्ष रूप से गांधीवाद से जुड़े हुए हैं।

हरिजन उत्थान के लिये महात्मा गांधी द्वारा किये गए प्रयासों एवं उनके विचारों का ही परिणाम था कि कई काव्य और उपन्यास वंचित एवं शोषित वर्ग पर लिखे गए। मैथिलीशरण गुप्त कृत 'किसान' और 'अछूत' खंडकाव्य, शरतचंद्र चटर्जी का 'पल्लवी समाज' आदि इसी श्रेणी की कविताएँ हैं। विश्व शांति के लिये अहिंसा की प्रेरणा गांधीवाद से ही साहित्यकारों को प्राप्त हुई। गांधी जी ने जो वैचारिक स्वातंत्र्य चेतना भारतीयों को दी थी, उसने भारतीयों में नवीन राष्ट्रीयता का संचार किया। इसी दिशा में साहित्यिक रचनाओं में अहिंसात्मक राष्ट्र-प्रेम तथा आत्मबलिदान का महत्त्व दिखाया जाने लगा। नाटककारों ने भी देशभक्ति, अछूतोद्धार, हिंदू-मुस्लिम एकता, नारी स्वतंत्रता, सत्य-अहिंसा आदि विषयों को अपनी कृतियों में अभिव्यक्त किया। जयशंकर प्रसाद ने अपने नाटक में महात्मा गांधी को ही 'प्रेमानंद' के रूप में प्रस्तुत किया है, जिसमें वह चरित्र से महात्मा गांधी के विचारों को ही प्रकट कर रहा है। इसी प्रकार त्याग-तपस्या पर आधारित सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का व्यंग्य नाटक 'बकरी' गांधीवाद से प्रभावित है।

अध्याय
3

निबंधों का संग्रह
(लगभग 250 शब्द सीमा)

3.1 कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्

M.P.P.C.S. (Mains) 2018

'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' श्रीमद्भगवद्गीता से ली गई यह पंक्ति व्यक्ति को सदैव कर्म पथ पर चलने के लिये प्रेरित करती है। इसका सीधा-सादा अर्थ है कि हमारा अधिकार केवल अपने कर्म पर है, उसके फल पर नहीं। आशय यह है कि प्रत्येक व्यक्ति को परिणाम की चिंता किये बिना अपना कर्म पूरी निष्ठा, समर्पण, शक्ति एवं एकाग्रता से करते रहना चाहिये।

अगर हम कर्मफल को सामने रखकर या फल की चिंता करते हुए कर्म पथ पर आगे बढ़ते हैं तो कर्म के प्रति हमारी एकाग्रता, निष्ठा एवं क्षमता में कमी आती है। परिणाम की चिंता में कर्म का अपेक्षित परिणाम न आने पर हम निराशा से भर जाते हैं।

यदि हम उपर्युक्त पंक्ति के भावार्थ को समझते हुए कर्म करेंगे तो न ही हमें कार्य के नकारात्मक परिणाम से निराशा होगी और न ही हम उसके सकारात्मक परिणाम के प्रति कोई आसक्ति रखेंगे।

किंतु इसका एक पक्ष यह भी है कि अगर हम कर्म के बाद परिणाम के बारे में विचार नहीं करते हैं तो उस कार्य में असफल होने के उपरांत हम आगे की रणनीति नहीं तैयार कर पाते हैं और अंततः निराशा के भँवर में धँस जाते हैं। अतः हमारे लिये यह महत्त्वपूर्ण है कि हम कार्य करने के साथ ही संभावित सफलता या असफलता के प्रति सजग रहें, ताकि अपेक्षित परिणाम प्राप्त न होने के बाद भी हम हताश न हों।

यदि हमारा कार्य उचित है तो हमें उसके परिणाम की चिंता नहीं करनी चाहिये बल्कि पूरे मनोयोग से कार्य के प्रति समर्पित रहना चाहिये। अनुचित कार्यों का परिणाम अशुभ ही होता है, अतः ऐसे कार्यों से बचना आवश्यक है। निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं कि हमें कार्यों का चयन सावधानीपूर्वक करना चाहिये। फल की इच्छा किये बिना कर्म मार्ग पर हम अधिक दृढ़ता से अपने पग आगे बढ़ा पाएंगे, फिर चाहे सफलता मिले या न मिले, क्योंकि हमारा किया गया प्रयास भी तो हमारी सफलता ही है।

3.2 राष्ट्रभाषा हिन्दी : स्थिति और अपेक्षाएँ

M.P.P.C.S. (Mains) 2018

किसी भी भाषा की स्थिति चार आधारों पर तय की जाती है। जनमानस में उस भाषा की पैठ, जीविका के लिये उसकी उपयोगिता, प्रसार माध्यमों में उसका चलन व उसकी उपयोगिता और अन्य भाषाओं के आवश्यक शब्दों को समाहित करने की क्षमता। इन चारों आधारों पर हिन्दी की स्थिति पहले की अपेक्षा अधिक मज़बूत हुई है। मंदारिन और अंग्रेज़ी के बाद हिन्दी दुनिया में तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। बीते कुछ वर्षों में दुनियाभर में हिन्दी की लोकप्रियता का ग्राफ तेज़ी से बढ़ा है। साथ ही वैश्विक स्तर पर दुनिया के सौ से अधिक विश्वविद्यालयों में हिन्दी का एक पाठ्यक्रम के रूप में शामिल हो जाना भी हिन्दी के उज्ज्वल भविष्य की ओर इशारा करता है।

हिन्दी आज संपर्क भाषा के रूप में सशक्त माध्यम बन चुकी है। हालाँकि, हिन्दी को राष्ट्रभाषा के तौर पर स्थापित करने, विज्ञान एवं तकनीक की भाषा बनाने, न्यायालयों और रोज़गार की भाषा बनाने संबंधी अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं, लेकिन विडंबना है कि हिन्दी अपनी ही ज़मीन पर उपेक्षित भी है।

भारत एक भाषायी विविधता वाला देश है। संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाएँ शामिल हैं। हर भाषा का अपना विशेष महत्त्व है। राष्ट्रभाषा को लेकर संविधान निर्माण समिति के सदस्यों के बीच गहन विचार-विमर्श किया गया और सभा द्वारा अनुच्छेद 343 से 351 के तहत हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया गया। हिन्दी उत्थान हेतु 1949 में हर वर्ष 14 सितंबर

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी, फ्लोचार्ट तथा मानचित्र का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- क्विक रिवीजन हेतु प्रत्येक अध्याय में महत्त्वपूर्ण तथ्यों का संकलन।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS

YouTube Drishti IAS

drishtiias

drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 011-47532596, +91-8130392354, 813039235456